



भा० अ०
५६

अथवा वेदमें प्रकाशमान सर्वज्ञ तीनलोक हैं नाभि में जाके तीनलोकन के ऊपर स्थितहौ जीवनके अंतर्ध्यामी विष्णु तिनके अर्थ नमस्कार २६ भुवनके आदि अन्त मध्य तुमहौ अनन्तहै शक्ति जाकी जाहि पुरुष कहे हैं जैसे भीतर गिरयो तुणादिक ताहि गंभीर प्रवाह सो आकर्षणकरे तैसे कालरूपी जो तुम सो विष्णुको आकर्षण करोहौ २७ स्थावर जंगम जे प्रजा तिनके अर्थ प्रजापतिन के तुम उपजावनवारे हौ हे देव ! स्वर्गते अष्टभये जे देवता तिनकुं आश्रयहौ जैसे जलमें दूबतेनकुं नौका आश्रयहै २८ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेऽष्टमस्कन्धेटीकायां सप्तदशोऽध्यायः १७।
(ततस्तस्याद्वादो भून्वा वामनः सहस्रतोऽखिलैः ॥ यज्ञगतस्ततस्तेन सत्कृत्योक्तो वरानहृद्युः १ अठारह के अध्याय में वामनरूपहोके यज्ञमें गये सवने सत्कार किये राजावलिने सत्कार करिके वर मांगो ऐसे कहे यह वर्णन करे हैं १) श्रीशुकदेवजी कहे हैं ऐसे ब्रह्माने स्तुति कियो है कर्म प्रभाव जाको सत्यु जन्म करिके ग्रन्थ हरि सो अदिति में प्रकट होतभये चारि हैं भुजा जिनके शंख

अ०
१७

एष्वे २६ त्वमादिस्तोऽभुवनस्यस्यमनन्तशक्तिपुरुषं यमाहुः ॥ कालो भवानाक्षिपतीश विश्वं स्रोतो यथाऽन्नः पतितं गभीरम् २७ त्वं वै प्रजानां स्थिरजङ्गमानां प्रजापतीनामसिंभविष्णुः ॥ दिवोकसां देवदिवश्च्युतानां परायणं नौरिवमज्जतोऽप्सु २८ ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणेऽष्टमस्कन्धे सप्तदशोऽध्यायः १७।
श्रीशुकदेववाच ॥ इत्यं विरिञ्च्यस्तुत कर्मवीर्यः प्रादुर्बभूवा सुतभूरदित्याम् ॥ चतुर्भुजः शङ्खगदाचक्रैः पिशाङ्गवासानलिनायतेक्षणः १ श्यामावदातो भूपराजकुण्डलखिषोः सच्छीवदनाभुजः पुमान् ॥ श्रीवत्सवक्षस्वलायाङ्गदोः सत्किरीटकाश्रीगुणचारुनूपुरः २ मधुव्रतव्रातविभ्रुप्रयासव्याविराजितश्रीव नमालयाहरिः ॥ प्रजापतेर्वैश्वतमः स्वरोचिषाविनाशाय चक्रण्डनिविष्टकौस्तुभः ३ दिशः प्रसेदुः सलिलाशयास्तदाप्रजाः प्रहृष्टाः श्रुतवोगुणान्विताः ॥ द्यौरन्तरिक्षं क्षिति रग्निजिह्वा गावोऽद्विजाः संजहृषुर्नगाश्च ४ श्रोण्यायां श्रवणद्वादश्यां सुहृत्सोऽभिजितप्रभुः ॥ सर्वे नक्षत्रताराद्याश्चक्रुस्तज्जन्मदक्षिणम् ५ द्वादश्यां सविता तिष्ठन्न मध्यं दिनगतो नृप ॥ विजयानामसाप्रोक्त्वा यस्यां जन्मविदुर्हरिः ६ शङ्खदण्डभयोनेहुर्षुदङ्गपणवानकाः ॥ चित्रवादित्रनूपाणां निर्घो

गदा कमल चक्र ये हैं विद्यमान जिनके पीरे हैं वल्ल जिनके कमल से विशाल हैं नेव जिनके १ श्यामसुन्दर उज्ज्वल है देह जिनको मकराकृत जे कुण्डल तिनकी जो श्री ता करिके सुन्दर है मुख जिनको श्रीवत्स है वृत्तःस्थल में जाके चूरा वावुवन्द इनकरिके शोभायमान किरीट कांची सुन्दर नूपुर ते हैं जिनके २ शौरानके जे समूह तिन करिके शब्दित ऐसी जो अपनी वनमाला ता करिके विराजत जो हरि सो अपनी कांति करिके नश्यगजी को जो घर ताको जो अन्धकार ताहि नाश करतभये कंठमें है कौस्तुभपरिणं जिनके ३ ता समय दिशा प्रसन्न होतभई नदी सरोवर निर्भल होत भये प्रजा प्रसन्न होतभई गुणन करिके युक्त ऋतु होतभई स्वर्ग आकाश पृथ्वी देवता गाइ ब्राह्मण ते प्रसन्न होतभये ४ भादोंके शुक्लपक्षकी द्वादशी तामें अथवा नक्षत्रके योग में अभिजित में मधु प्रकट होतभये तिनके जन्मकुं सच नक्षत्र तारा आदिक ते उदार करतभये ५ जा द्वादशी में हरिको जन्म है तामें दिनही में कहे हैं दिनहूं में मध्याह्न में सूर्य स्थितहै सो द्वादशी विजया नाम कहे

५६